शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

भारत चीन सम्बन्ध : दशा और दिशा अतीत से वर्तमान तक

डॉ0 शिवाली अग्रवाल,*& पूनम रानी**
*निर्देशिका, एसो0 प्रो0 एवं विभागाध्यक्षा, इस्माईल नेशनल महिला पी0जी0 कॉलिज,
*शोधार्थिनी, इस्माईल नेशनल महिला पी0जी0 कॉलिज,

साराशं

भारत व चीन एशिया की उभरती ऐसी शक्तियाँ हैं जिनकी विदेश नीति का विश्व एशिया की राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इनके पारस्परिक सहयोग अथवा संघर्ष से न केवल एशियाई सुरक्षा परिवेश अपितु वैश्विक शक्ति संरचना पर भी प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। भारत–चीन सीमा विवाद के जटिल परिदृश्य से भारत की सुरक्षा जहाँ एक और अस्थिरता से ग्रस्त है वही चीन व भारत पड़ोसी राष्ट्र के मध्य स्थापित सामरिक व नाटकीय संबंधों के अतिरिक्त एशिया प्रशांत क्षेत्र में निरंतर बढ़ रही उसकी सामरिक अभिरूचि से भारतीय सुरक्षा पर दबाव बढ़ रहा है। विश्व स्तर पर तीव्रता से उभर रही द्वितीय व चौथी बड़ी आर्थिक शक्तियों क्रमशः चीन व भारत के मध्य हो रही स्पर्धा से न केवल एशिया अपितु अंतर्राष्ट्रीय भू–राजनीतिक स्वरूप के प्रभावित होने की प्रबल सम्भावनाएँ हैं।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
डॉ0 शिवाली अग्रवाल,* & पूनम रानी**

भारत चीन सम्बन्ध : दशा और दिशा अतीत से वर्तमान तक

शोध मंथन, दिस0 2017,
पेज सं0 129.136
Artcile No. 21 (SM 661)
http://
anubooks.com?page_id=581

डॉ0 शिवाली अग्रवाल, पूनम रानी***

भारत और चीन न केवल पड़ोसी राष्ट्र है अपितु उनमें प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक संबंध चले आ रहे हैं। जिसका इतिहास साक्षी है जब दोनों विदेशी आधिपत्य में चले गये तो इनके ये संबंध टूट गये। 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ और उधर 1949 में कोमिंतांग सरकार के पतन के बाद चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। साम्यवादी शासन की स्थापना के बाद ही यह महसूस किया गया कि भारत के चीन के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना का मार्ग अनेक कठिनाईयों से भरा हुआ है। भारत ही वह प्रथम देश था जिसने साम्यवादी चीनी सरकार को सर्वप्रथम मान्यता प्रदान की थी। चीन के प्रति भारत का दृष्टिकोण प्रारम्भ से ही मित्रतापूर्ण रहा है। सन् 1954–57 का काल भारत–चीन सम्बन्धों में प्रमोद काल कहलाता है। स्वतंत्र भारत में हिंदी–चीनी भाई–भाई का नारा बहुत लोकप्रिय रहा है।

किन्तु यह प्रमोद काल अधिक समय तक नहीं चल पाया ओर चीन ने भारत के साथ विश्वासघात किया तथा 1962 में भारत पर अचानक आक्रमण कर दिया। यह आक्रमण चीनी की साम्राज्यवादी नीति का परिणाम था। इसके परिणामस्वरूप भारत और चीन के मधुर सम्बन्ध बिगड़ गए और इनमें भारी कटुता आ गई। चीन ने पंचशील समझौते का पूर्णतया उल्लंघन किया। 1957–1978 तक भारत–चीन सम्बन्ध में टकराव और तनाव चलता रहा है। इस काल में चीन यह प्रयास कर रहा था कि भारत के पड़ोसी देशों को अपनी ओर मिला लें। इसलिए वह पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, म्यांमार को अनेक सहायताएं प्रदान कर रहा है। इस सम्बन्ध में चीन का पाकिस्तान प्रेम जगजाहिर है और वर्तमान में भी चीन–पाक प्रेम देखने को मिलता है। बांग्लादेश संकट के समय भी चीन भारत को लगातार धमकियां देता रहा। चीन हर सम्भव प्रयास कर रहा था कि भारत विकास की राह पर आगे न बढ सकें।

1978–2008 तक के काल को भारत–चीन सम्बन्धों में संवाद के काल के नाम से जाना जाता है इस समय दोनों देशों में सत्ता परिवर्तन हुआ। भारत में जनता सरकार सत्तारूढ़ हुई तो चीन में माओत्तर नेताओं द्वारा सत्ता संभाली गई। दोनों देशों ने विगत बातों को भूलकर नये सिरे से मधुर सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा में प्रयास किये। अनके कूटनीतिक माध्यामों से भारत को पीकिंग से इस बात के संकते मिले कि वह भारत के साथ सम्बन्ध सुधारने का इच्छुक है जिसकी षुरूआत 1975 में टेबिल–टेनिस की प्रतियोगिता से हुई जिसका आयोजन कलकत्ता में हुआ था। इसमें चीनी खिलाड़ियों के एक दल ने भाग लिया। इसके बाद 1978 में वांग–पिंग–नान के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय चीनी प्रतिनिधि मण्डल भारत आया और यात्राओं का दौर चल पड़ा। दिसम्बर 1988 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने 5 दिवसीय चीनी यात्रा की। यह पिछले 34 वर्षो में पहला अवसर था जब कोई भारतीय प्रधानमंत्री चीन यात्रा पर गया। यह यात्रा भारत–चीन सम्बन्ध में सुधार का संकेत थी।

1994 में चैन में भारत महोत्सव आयोजित किा गया यह चीन में हेने वाला किसी विदेशी राष्ट्र का पहला महोत्सव था। दोनों देशों में राजनीमिक एवं व्यापारिक तथा सांस्कृतिक यात्राएं चलती रही। किन्तु इसी बीच तिब्बत के धार्मिक गुरू करमापा लामा को शरण देने का मामला उठ खड़ा हुआ। 11 जनवरी 2000 को चीन ने भारत को परोक्ष चेतावनी देते हुए कहा कि वह भारत पहुँचे तिब्बती धार्मिक नेता करमापा लामा को राजनीतिक शरण न दें। चीनी विदेश मंत्रालय के अनुसार करमापा लामा को राजनीतिक शरण देना दोनों देशों के सम्बन्धों के आधार शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के पंचशील सिद्धांतों का उल्लंघन होगा।

तत्कालीन भारतीय राष्ट्रपति के.आर.नारायणन ने चीन के साथ संबंधों को ओर मजबूत करने के उद्देश्य से सन् 2000 में चीन की छः दिवसीय राजकीय यात्रा की। दोनों देशों ने उलझे हुए सीमा विवाद के तर्कसंगत हल पर सहमति व्यक्त करते हुए द्विपक्षीय सम्बन्धों के विस्तार के लिए विशिष्टजन दल गठित करने का फैसला किया। सितम्बर 2000 को शंघाई में भारत व चीन की नौसेनाओं ने पहला संयुक्त युद्धाभ्यास सम्पन्न किया। इसके बाद चीनी प्रधानमंत्री जनवरी 2002 में 140 सदस्यीय शिष्ट मण्डल के साथ भारत आए। चीनी प्रधानमंत्री ने कहा कि चीन–पाकिस्तान का निकट सहयोगी एवं मित्र है, फिर भी आतंकवाद के विरूद्व संघर्ष में वह पूरी तरह भारत का साथ देगा।

मई 2004 में प्रकाशित वर्ल्ड अफेयर्स ईयर बुक 2003–04 में चीन ने पहली बार सिक्किम को भारत के अंग के रूप में प्रदर्शित किया। यह भारत के लिए अच्छा संकेत था। इसके बाद 2005 में चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ बंगलौर के रास्ते दिल्ली आये। वेन के मौजूदा यात्रा में पांच वर्ष में सभी विवादों को सुलझाने और सहयोग व साझीदारी की नई ऊँचाईयों तक ले जाने की जो सहमति बनी, वह इसी का संकेत है। दोनों देशों ने जिस समझौते पर दस्तखत किये उससे तय हो गया कि सीमा–विवाद को संबंधों के आड़े नहीं आने दिया जायेगा।

2007 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने चीन का दौरा किया। दोनों पक्षों ने भारत और चीन के बीच 21वीं सदी के लिए एक साझा विज़न को जारी किया और विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग के लिए 10 अन्य दस्तावेजों पर भी हस्ताक्षर किए। इसी तरह कई वर्शो तक भारत–चीन यात्राएं चलती रही।

भारत–चीन रणनीतिक आर्थिक वार्ता– 'पारस्परिक लाभ के लिए विकास, नवाचार और सहयोग' विशय के अन्तर्गत अक्टूबर 2016 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। आपसी संबंधों को और प्रगाढ करने के उद्देश्य से भारत और चीन के बीच विभिन्न क्षेत्रों–नीति समन्वय, बुनियादी ढांचे, उच्च तकनीकि, संसाधन और पर्यावरण संरक्षण तथा ऊर्जा आदि के क्षेत्र में कार्य समूहों के आधार पर वार्ता की गई। इस वार्ता के दौरान दोनों देशों ने अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से ऊर्जा खरीदने, हाई स्पीड रेलवे के निर्माण और तटीय विनिर्माण क्षेत्रों के विकास में सहयोग पर समझौते किए। दोनों देशों के बीच ऊर्जा की बढ़ती मांगों को पूरा करने के उद्देश्य से एक उचित व नीतिगत प्रयासों के लिए संयुक्त रूप से निर्णायक रणनीति बनाने पर सहमति हुई। साथ ही, दोनों देशों ने वर्ष 2017 तक बुनियादी ढांचे, ऑटोमोबाइल, ऊर्जा और इलेक्ट्रानिक्स जैसे क्षेत्रों में विकास पर निकट सहयोग की नई थीम अपनाने पर सहमति व्यक्त की।

इसके अतिरिक्त दोनों देशों ने दिल्ली–नागपुर हाई स्पीड रेल परियोजना के व्यवहार्यता अध्ययन तथा दिल्ली–चेन्नई हाईस्पीड रेलवे के निर्माण के कार्य को आगे बढ़ाने पर सहमति जताई। चाइना साउथ वेस्ट जियाओटोंग विश्वविद्यालय तथा भारत के रेल मंत्रालय का प्रशिक्षण विभाग हाई स्पीड रेलवे के क्षेत्र में आठ प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करने पर सहमत हुए।

लेकिन इन सबके बावजूद चीन अपनी हरकतों से कभी बाज नहीं आया है। वह बीच–बीच में कोई न कोई विवाद खड़ा कर देता है चाहे सीमा विवाद हो या नदी जल विवाद या एन0एस0जी0 में भारत की सदस्या का प्रश्न हो वह लगातार भारत को रोकने का प्रयास करता है।

भारत और चीन दोनों ही दक्षिण एशिया की तेजी से उभरती हुई महाशक्तियां है। आर्थिक क्षेत्र से लेकर सैन्य शक्ति तक दोनों तेजी से खुद को मजबूत बनाने में जुटी है। अपना–अपना प्रभुत्व कायम

करने के लिए दोनों ही देश गाहे बगाहे आमने–सामने आ जाते है। दोनों मुल्कों के बीच टकराव के एक नहीं कई कारण है, लेकिन सीमा विवाद सबसे प्रमुख है।

1. **सीमा विवाद**– भारत और चीन के बीच किसी एक क्षेत्र को लेकर सीमा विवाद नहीं है बल्कि कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ चीन तो कहीं भारत को आपत्ति है। दोनों देशों के बीच करीब 3500 किमी ल्मबी सीमा है। ताजा मामला सिक्किम का है, जहाँ पठारी क्षेत्र डोकलाम पर चीन अपना दावा करता है तो भूटान अपना दावा करता है। भारत भूटान के दावे का समर्थन करता है। चीन में इस क्षेत्र को डोगलोंग नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त चीन अरूणाचल प्रदेश के बडे हिस्से पर अपना दावा करता है। अरूणाचल की 1126 कि0मी लम्बी सीमा चीन के साथ और 520 कि.मी. लम्बी म्यांमार के साथ मिलती है। चीन कहता है कि भारत से उसका सीमा विवाद सिर्फ 2000 किमी0 है। इसमें ज्यादातर हिस्सा अरूणाचल प्रदेश में आता है।

इन दोनों क्षेत्रों के अलावा एक मामला अक्साई चीन पर भारत–चीन का विवाद है। भारतीय पक्ष है कि ब्रिटिश भारत और तिब्बत ने 1914 में शिमला समझौते के तहत मैकमोहन को अंतराष्ट्रीय सीमा माना, जबकि चीन इसको नहीं मानता। 1962 के युद्ध के बाद हमारा बहुत बड़ा भाग चीन ने अपने हिस्से में मिला लिया, जिसे अक्साई चीन कहा जाता है। अक्साई चीन का कुल हिस्सा करीब 38 हजार वर्ग किमी0 लम्बा है जो निर्जन पहाड़ी इलाका है।

2. **ब्रह्मपुत्र नदी पर बांध** : चीन ने तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी पर अपनी सबसे बड़ी पन–बिजली परियोजना **'जम हाइडो पावर स्टेशन'** का निर्माण किया है। इस परियोजना से भारत को यह चिंता है कि चीन जल आपूर्ति को बाधित कर सकता है या संघर्ष के समय इन बांधों से अतिरिक्त पानी छोड सकता है जिससे भारत में बाढ़ आने का गंभीर खतरा पैदा हो जायेगा। एक गैर सरकारी संगठन की रिपोर्ट के अनुसार चीन ने ब्रह्मपुत्र नदी पर करीब छोटे–बडे 26 बांधों का निर्माण किया है जबकि चीन के बुहान क्षेत्र में स्थित जम हाइडोपावर स्टेशन में उसने 1.5 अरब डॉलर का निवेश किया है। इन बांधों के विरूद्व अक्सर अपनी आपत्ति जताता रहा है।

3. **नदियों के पानी का बहाव**– माउंट कैलाश से निकलने वाली 4 नदियां भी दोनों देशों के लिए एक बड़े विवाद की जड़ है। इसमें ब्रह्मपुत्र शामिल है। जहां चीन ने बांध बनाकर पानी को बाधित कर दिया है। इससे जल का बहाव प्रभावित है। इसके अलावा मा–चा–खबब, लैंगचग खबब और सेंगे खबब भी ऐसे तीन नंदिया है, जो चीन से निकलती हुई भारत पहुँचती है। मा–चा–खबब की बात करें तो वो उत्तरी माउंट कैलाश से निकल कर नेपाल पहुंचती है और इसके बाद भारत के उत्तर प्रदेश में प्रवेश करती है। लैंगचंग खबब नदी भी उत्तरी माउंट कैलाश से निकलकर धापा और नागरी क्षेत्र में बहते हुए पहुँचती है। इसके बाद किन्नौर वैली और रामपुर होते हुए भारत में प्रवेश करती है। भारत में इसे सतलज नदी के नाम से जाना जाता है। यह हिमाचल से बहते हुए सतलज पंजाब और फिर पाकिस्तान पहुंचती है।

चौथी नी सेंगे खबब है, जो पश्चिम माउंट कैलाश से निकलकर लद्दाख और कश्मीर में प्रवेश करती हैं इसके बाद वो पाकिस्तान पहुंचकर अरब सागर में समा जाती है। इन नदियों पर चीन का प्रभुत्व

है और इन पर बडे बांध बनाने की योजना है। पानी के बंटवारे पर जहाँ भारत को आपत्ति है तो चीन इस पर अपना अधिकार जताता है।

भारत चीन सम्बन्धों में सुधार करने के लिए आवश्यक है कि दोनों देश अतीत के विवादों को भूलकर एक नए अध्याय का आरम्भ व्यापार, व्यवहार एवं विश्वास के साथ करें, आशंकाओं एवं संदेहों को दर किनार कर सामरिक सतर्कता के साथ संबंधों को सुधारने पर बल देने की सामरिक आवश्यकता है। यद्यपि हमारे चीनके साथ अनेक मुददों पर विरोधाभास है, जैसे भारत में सिक्किम विलय को मान्यता न देना, दोनों देशों के बीच अणु अप्रसार संधि, दलाई लामा का भारत में प्रवास, पाकिस्तान के प्रति उसका विशेष झुकाव व हथियारों की आपूर्ति तथा सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता के संदर्भ में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दक्षिण एशिया में जो स्थिति है, इसमें दोनों देशों को अपने क्रियावादी रूख का परित्याग करना होगा और संबंधों के संदर्भ में ठोस पहल करनी होगी।

यद्यपि सीमा विवाद बेहद जटिल है किन्तु अमेरिका के बढ़ते वर्चस्व एवं मांग समंवित परिवेश की दृष्टि से भारत–चीन के साथ एक समुचित सौहार्दपूर्ण वातावरण का विकास एक आवश्यकता बन गई है। प्राप्त अधिकारिक सूचना के अनुसार अक्टूबर 2016 में चीन द्वारा ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी शिया बुकु का पानी तिब्बत में रोक दिया गया। गौरतलब है कि शियाबुकु नदी पर ही चीन अपनी सबसे बडी जल विद्युत परियोजना 'लाल्हो' का निर्माण कर रहा है जिसके वर्ष 2019 तक पूरा होने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। चीन की यह परियोजना तिब्बत के षिगंज इलाके में स्थित है, जो सिक्किम के निकट है। शिगंज से ही ब्रह्मपुत्र नदी भारत के अरूणाचल प्रदेश में प्रवेश करती है और यह नदी भारत के इस क्षेत्र सहित बांग्लादेश की जल की आवश्यकता को पूरा करती है।

चीन द्वारा पानी रोकने का प्रयास ऐसे समय में किया गया जब भारत ने उड़ी में सेना मुख्यालय पर हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान से हुए सिंधु जल समझौते पर समीक्षा करने का फैसला किया है। ऐसे में चीन का यह रूख इस आशंका को जन्म देता है कि कहीं वह पाकिस्तान के साथ मिलकर भारत पर दबाव बनाने की कोशिश तो नहीं कर रहा है। हालांकि चीन द्वारा बनाए जा रहे इस डैम का विरोध भारत पहले भी कर चुका है, लेकिन चीन इसे दरकिनार कर कार्य को आगे बढाता रहा।

चीन के साथ भारत का जल को लेकर कोई द्विपक्षीय या बहुपक्षीय समझौता नहीं है। इसलिए चीन द्वारा अतिसक्रिय बांध निर्माण एक चिंता का विषय बना हुआ है। चीन की एक मंशा यह भी रही है कि उसके बांध निर्माण से अरूणाचल प्रदेश पर उसके दावे को मदद मिलेगी। तिब्बत के पठार पर इस तरह से बांध के निर्माण से भारत में नहीं जल प्रवाह कम हो जाएगा, जिससे जल संकट उत्पन्न होने की भी आशंका है। चीन द्वारा बांधों, नहरों व सिंचाई प्रणालियों के चलते, जल को युद्ध में काम आने लायक या शांतिकाल में पडोसी देश के प्रति अपनी खोज दर्षाने के लिए एक राजनीतिक हथियार बनाया जा सकता है। भारत ने चीन को ब्रह्मपुत्र नदी पर उसकी जल परियोजनाओं के प्रति चिंता जाहिर करते हुए शिकायत की थी और इसी वर्ष भारत और चीन ने सीमा से लगे नदियों के प्रवाह के आंकड़े को चीन द्वारा भारत को दिए जाने से संबंधित उच्चस्तरीय स्तर पर समझौते किया था।

हाल ही में भारत और चीन के मध्य डोकलाम विवाद हुआ। डोकलाम क्षेत्र में यकायक चीन ने अपनी सेनाएं भेज दी जिससे भारत को भी अपनी सेनाएं भेजनी पड़ी। डोकलाम त्रिकोण से भारत और

चीन की सेनाओं के पहले की स्थिति पर लौट जाने से तीन बातें तय हो गई है। पहली – चीन डोकलाम पर सड़क निर्माण नही करेगा और भूटान से सीमा विवाद बातचीत से सुलझाएगा।

दूसरी संवेदनशील सीमांत डोकलाम त्रिकोण पर कब्जे की चीनी कोशिश विफल हुई। तीसरी भूटान सहित सभी क्षेत्रीय देशों को अहसास हो गया कि भारत उनकी सहायता एवं रक्षा करने में समर्थ है और वह चीनी दबाव में झुकने वाला नहीं है। यदि भारत कमजोरी दिखाता तो ये सभी देश भारत छोड़ चीन की ओर देखने लगते हैं, यह नहीं हुआ भारत की दृढ़ता के कारण स्वतंत्रता के बाद यह पहला अवसर है जब भारत ने चीन के साथ युद्ध के कगार तक जा पहुंचे सीमा विवाद को अपनी कूटनीतिक दृढ़ता एवं सैन्य साहस के बल पर शांति से सुलझा लिया। इसका केवल क्षेत्रीय शक्ति संतुलन पर ही नहीं बल्कि विश्व राजनीति के स्तर पर भी हमारे पक्ष में अच्छा असर होगा। डोकलाम में मुख्य मुद्दा था– भूटान की भूमि पर भारत के लिए खतरनाक साबित होने वाली चीन की सड़क का निर्माण रोकना। इसमें भारत को सफलता मिली। भारत की दष्ढता के आगे चीन की धमकियां और अशिष्टता बेअसर रही और उसके अतिरेकी प्रचार का गुब्बारा भी फूट गया।

इस कूटनीतिक विजय के आने वाले वर्शो में बडे परिणाम होगें। 3 सितम्बर 2017 को चीन में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन हुआ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इसमें भाग लेने के लिए चीन गए। चीन ब्रिक्स को अपनी कूटनीति के एक बड़े साधन के रूप में मानता है। ब्रिक्स में भारत, चीन के अलावा रूस, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका भी शामिल है। बिना डोकलाम का जिक्र किए अस्ताना में प्रधानमंत्री मोदी और चीनी राष्ट्रपति श्री चिनफिंग के बीच हुई बातचीत में उभरी इस सहमति का भी उल्लेख किया कि असहमतियों को विवाद में बदलने के बजाय वार्ता से सुलझाना होगा। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि दो भाई जब साथ में रहते है तो उनमें खटपट भी होती है, लेकिन उसे आपसी भाईचारे से सुलझा लिया जाता है।

बीच–बीच में चीन कुछ ऐसे कार्य करता रहता है कि भारत–चीन संबंधों में कुछ कटुता सी आ जाती है। चीन की हिंद महासागर में अवैध घुसपैठ इसका का ताजा उदाहरण है। हिंद महासागर में चीनी नौ सेना की बढती दखलंदाजी ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में ला दिया है। चीन ने भारत को चेताते हुए कहा कि सामरिक रूप से एक खास हिंद महासागर क्षेत्र में संतुलन लाने में वह भारत की अहम भूमिका को स्वीकार करता है, किन्तु इसे भारत का आँगन समझने की धारणा परेशानी का कारण बन सकती है। चीन ने कहा कि यदि भारत यह मानता है कि हिंद महासागर उसका आंगन है तो कैसे अमेरिका, रूस और आस्ट्रेलिया की नौ सेनाऐं हिंद महासागर में स्वतंत्र आवागमन करती है। हिंद महासागर में चीनी नौ सेना की बढती उपस्थिति पीपुल्स लिबेरेशन आर्मी द्वारा हाल ही में प्रकाशित एक श्वेत पत्र की पृश्ठभूमि में हुई है जिसमें अपने तटों से बहुत अधिक दूर खुले समुद्र में संरक्षण के लिए चीनी सेना की भूमिका को पहली बार रेखांकित किया गया है और इसमें नई सैन्य सामरिक नीति की रूप रेखा पेष की गई है। हिन्द महासागर में चीनी हस्तक्षेप भारत के लिए चिंता का सबब बना हुआ है।

हिंद महासागर क्षेत्र में शांति, प्रगति और समृद्धि को बढावा देने के लिए दूसरा दो दिवसीय हिंद महासागर सम्मेलन अगस्त 2017 में श्रीलंका की राजधानी कोलम्बो में आयोजित किया गया। सम्मेलन में नेविगेशन और ओवर फ्लाइट की स्वतंत्रता, सामूहिक रूप से आंतकवाद का मुकाबला करने, समुद्री लुटेरों के खिलाफ सहयोग जैसे मुद्दों पर विचार–विमर्श किया गया।

डोकलाम और हिंद महासागर में चीन की लगातार घुसपैठ के कारण भारत चीन संबंधों में पैदा हो रहे नए विश्वास के बादल भी गायब हो गए है। इसलिए अब चीन पर भरोसा करना पहले से भी ज्यादा मुश्किल होगा। भले ही आज राष्ट्रीय क्रिकेट टीम को चीनी कंपनी प्रायोजित कर रही हो और चीनी मोबाइल फोनों के लिए दिग्गज हस्तियां विज्ञापन कर रही हो, लेकिन पिछले दो महिनों में चीनी उत्पादों की बिक्री में 13 प्रतिशत कमी दर्ज की गई है और चीनी कम्पनियों के दर्जनों एक्जीक्यूटिव चीन लौट गए। जाहिर है डोकलाम का असर गहरा जायेगा। डोकलाम जैसी घंटनाएं वर्श में दो तीन बार चीन की सीमाओं पर होती ही है। हालांकि उनका स्तर छोटा होता है। भारत को आने वाले समय के लिए और चौकन्ना एवं तैयार रहना होगा। सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास, सड़क निर्माण एवं सैन्य तैयारियों पर विशेष ध्यान देते हुए चीन के साथ आयात–निर्यात मेंअसंतुलन ठीक करना होगा। उत्तराखण्ड जैसे प्रांतों में सीमा क्षेत्रों से हो रहा लगातार पलायन सुरक्षा के लिए खतरा है। इसके लिए विशेष परियोजना बनाने में देरी न हो। फिलहाल चीनी धमकियों को भारत की संयमित, किन्तु धारदार कुटनीति ने परास्त कर दिया, लेकिन जीत के जश्न का कोई कारण नहीं है।

भविष्य भारत और चीन का है। भारतीय ब्रिटेन और अमेरिका के बारे में ज्यादा जानते है। अब समय है चीन को समझने, देखने और जाने का। ध्यान रहे कि दो हजार वर्ष के इतिहास में सिर्फ एक युद्ध हुआ है। चीनी जन मानस भी भारत को बुद्ध के देश के रूप में देखते है। यह समय की मांग और जरूरत है कि एक ओर जहाँ जनता के स्तर पर चीन से सम्बन्ध बढ़े वही दूसरी ओर भारत आर्थिक एवं सैन्य स्तर पर शक्तिवर्द्धन को गति दें। ऐसा होने पर ही भविष्य के डोकलाम रोके जा सकेंगे।

संदर्भ सूची –

1. डॉ0 बी0 एल0 फरिया, अतंर्राश्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2010
2. दृष्टि द विजन, वार्षिक 2017, दृष्टि पब्लिकेशन 2017
3- Https.//hindi.news18.com
4- www.essays in hindi.com/India/essays-on-indo/5092
5. डॉ0 एस0 सी0 सिंघल, भारत की विदेष नीति, लक्ष्मी नारायण पब्लिकेशन
6- ddnew.gov.in/hi/internationa;
7. दैनिक जागरण संपादकीय 30 अगस्त 2017
8- https://hi.wikipedia.org/../
9. परीक्षा मंथन ''भारत–चीन संबंध उलझे तार'' 2010–2011
10- nttps://khabar.ndtv.com
11. आर0 एस0 यादव, भारत की विदेश नीति, किताब महल प्रकाशन
12. डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारत और चीन, सत्मार्ग प्रकाशन दिल्ली, सन् 2000
13. एयर कमांडर जसजीत सिंह, भारतीय परमाणु शस्त्र एक नई दिशा, प्रभात प्रकाशन दिल्ली 2004

14. राम माधव, असहज पड़ोसी युद्ध के 50 वर्शो बाद भारत और चीन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 2015
15. प्रो0 रामचन्द्र सिंह, आक्रांत हिमालय, षारदा संस्कृत संसथान प्रकाशन वाराणसी।
16- https://blogs.navbharattines.indiatimes.com
17. जे0एन0 दीक्षित, भारत की विदेश नीति और आतंकवाद, ज्ञान पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली।
18- Panchganga.com/arch/2008/1/20/file 10.htm
19. दौलतसिंह जोरावर, द हिमालयन स्टेलमेंट रीट्रसींग द इण्डिया–चीन डिस्टयुट, सेक्टर फॉर लैंड वैलफेयर स्ट्रेटजी, के0 डब्लू0 प्रकाशन नई दिल्ली 2011
20. दैनिक जागरण, चिंतित करता चीन संपादकीय, 16 सितम्बर 2010।